GOVT V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE, DURG (C.G.)

(Former Name- Govt.Arts& Science College, Durg)
Phone No 0788-2359688 Fax No 0788-2212030
Website-w w w.govtsciencecollegedurg.ac.in. Email- pprinci2010@gmail.c

DEPARTMENT OF HISTORY
15 DAYS WORKSOP
ON
PURATATVIK PRATIKRITI NIRMAN KARYASHALA

Programme . Value Added (Skill Development, Entrepreneurship)

REPORT

The Department of History organized 12 days' workshop on **Puratatik Pratikriti Nirman Karyashala** in collaboration with Department of Culture and Archaeology, Government of Chhattisgarh for UG & PG students of the college from 17 to 28 March 2023. .The training Programme was inaugurated on 17 March 2028 and closing ceremony was held on 13 April 2023.

Objectives of the workshop

1. **To acquaint students about our rich cultural heritage.**
2. **Training for reconstruction and preservation of archaeological remains.**
3. **Skill development of students for self-employment.**

About 50 students attended the workshop. The participants were trained in all four processes:-

1. mould making,
2. casting,
3. finishing work of the figurine
4. finally colouring.

By this workshop, the department imparted not only the knowledge of rich cultural tradition of India but also to protect and preserve our rich cultural heritage.

Programme Schedule (43 Hours)

S.No.	Date	Training Schedule	Hours

01	**17 March 2023**	**General Introduction about the course & Information about the materials required for it.**	**04 Hours**
02	**18 -19 March 2023**	**Mould making Process**	**04 Hours each day (2x4)** **(Total 8 Hours)**
03	**20 -24 March 2023**	**1. Casting figurine** **2. Drying**	**03 Hours each day(5x3)** **(Total 15 Hours)**
04	**25 -26 March 2023**	**Finishing works**	**04 Hours each day (2x4)** **(Total 8 Hours)**
05	**27 -28 March 2023**	**Gap Filling & Colouring**	**04 Hours each day (2x4)** **(Total 8 Hours)**

Photo 2- PARTICIPANTS LEARNING THE PROCESS

Photo 3- PARTICIPANTS LEARNING THE PROCE

Photo 3- PARTICIPANTS LEARNING THE PROCESS

Photo 4-PARTICIPANTS LEARNING THE PROCESS

प्रमुख ब्रीफ

नगर परिषद महेश्वर स्वच्छता पर नहीं दे रहा ध्यान

रिपोर्ट सुरेश चक्रवर्ती। महेश्वर, नगर परिषद महेश्वर के शासकीय अस्पताल के सामने वार्ड क्रमांक 9 में नालियों का पानी कई दिनों से जमा हुआ है, बीमारियों का प्रकोप बढ़ने की संभावना बढ़ती जा रही है शाम होते ही मच्छर काटने लगते है पिछले 15 दिनों से नालिया जाम हो चुकी है गंदगी से बदबू आती है जिससे लोगो को सांस लेने में दिक्कत भी आती है , आसपास के लोगों ने बताया कि कई बार नगर परिषद में बैठे अधिकारियो को अवगत कराने के बाद भी नालियों को अभी तक साफ नहीं करवाया। जबकि दूसरे वार्ड में

दुर्ग सांइस कॉलेज मे 10 दिवसीय पुरातात्विक प्रतिमाओं के प्रतिकृति निर्माण कार्यशाला का आयोजन

रिपोर्ट: रवि प्रकाश तामस्कर

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) के इतिहास विभाग द्वारा पुरातात्विक प्रतिमाओं के प्रतिकृति निर्माण (प्लास्टर कास्ट) कार्यशाला का आयोजन 17.08.2023 से 27.03.2023 तक छ.ग. शासन संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग रायपुर के सौजन्य से किया जा रहा है। इस कार्यशाला के प्रशिक्षक कलाकार श्री रामशरण प्रजापति एवं कलाकार श्री राजेन्द्र सुंदरिया है। जिनके कुशल मार्गदर्शन में महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के 36 विद्यार्थी एवं 10 प्राध्यापक नियमित प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है।

पुरातात्विक प्रतिकृति निर्माण की क्रियाविधि

1. सर्वप्रथम मूर्तियों को ब्रश की मदद से साफ किया गया, जिसके बाद उसमें नारियल तेल की पतली परत चढ़ाई जाती है।
2. तत्पश्चात् मूर्तियों पर लिक्विड रबर की लगभग 35 बार परत चढ़ाई जाती है ताकि एक मजबूत सांचा बन सके।
3. रबर सूखने के बाद उसमें ब्रश की मदद से साबुन तेल, पानी का घोल चढ़ाया जाता है ताकि सांचा आसानी से निकाला जा सके। मास्टर मोल्ड बनाने के लिए पीओपी का गाढ़ा घोल तैयार कर रबर मोल्ड के उपर डाला जाता हैं। जो 20-30 मिनट में सेट हो जाता है। बड़ी मूर्तियों को 2-4 भागों में सांचा तैयार किया जाता है ताकि उसे निकालने में आसानी हो। अब मास्टर मोल्ड तैयार है।
5. मूर्ति बनाने के लिए मास्टर मोल्ड के उपर रबर मोल्ड रखते हैं और उसके उपर ग्लिसरीन की पतली परत चढ़ाते हैं ताकि उसे निकालने में आसानी हो।
6. इसके पश्चात् रबर मोल्ड के उपर पीओपी का घोल डाला जाता है। जिसे सेट होने में 30-40 मिनट लगा।
7. अब तैयार मूर्ति को मूल मूर्ति के समरूप बनाने के लिए हेवसाब्लेड एवं सैंड पेपर का प्रयोग कर मूर्ति का वास्तविक रूप तैयार किया जाता है तत्पश्चात् पुरातात्विक कलर चढ़ा कर अंतिम रूप प्रदान किया जाता है।

कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों का कौशल विकास कर उन्हें रोजगारोन्मुख बनाना है। साथ ही पुरातात्विक प्रतिकृति निर्माण कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थी छत्तीसगढ़ अंचल के साथ साथ भारत के अन्य क्षेत्रों के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक मूर्तियों के महत्व से परिचित होते हैं। कार्यशाला में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह का मार्गदर्शन सदैव प्राप्त होता है और उनकी उपस्थिति से विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन होता है। महाविद्यालय के अन्य विभागों के प्राध्यापकों द्वारा भी कार्यशाला में विद्यार्थियों के लगन, तन्मयता एवं परिश्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की जाती है।

खास

महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित विविध शिल्प कलाओं की मनोहारी प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग में आयोजित बास शिल्प एवं पुरातात्विक प्रतिकृति प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ समापन समारोह

रिपोर्ट: रवि प्रकाश तामस्कर

दुर्ग (दबंग केसरी) दिनांक 1304.2023 को शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित पुरातात्विक प्रतिकृति प्रशिक्षण कार्यशाला एवं वास शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन समारोह उच्च शिक्षा विभाग की आयुक्त श्रीमती शारदा दमा के मुख्य आतिथ्य एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। साथ ही महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित विविध शिल्प कलाओं की मनोहारी प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। पुरातात्विक प्रतिकृति के प्रशिक्षक कलाकार श्री रामशरण प्रजापति एवं श्री राजेन्द्र सुंदरिया, मटपरई प्रशिक्षक ग्राम डुमरडीह के अभिषेक सपन एवं बांस शिल्प के प्रशिक्षक श्री राम शुमार पटल एवं उनके सहयोगी शुभम साहू तथा टेराकोटा एवं सेरेमिक आर्ट की प्रशिक्षक कु प्रज्ञा नेमा को उनके सहयोग के लिए इतिहास विभाग द्वारा सम्मानित

किया गया। इतिहास विभाग में विशिष्ट योगदान हेतु प्रियम वैष्णव वैष्णवी याग्निक एवं प्रज्ञा नमः को भी सम्मानित किया गया। कार्यशाला के प्रतिभागी विद्यार्थियों एवं प्राध्यापको को प्रमाणपत्र प्रदान किये गए। मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा आयुक्त श्रीमती शारदा वर्मा ने अपने उदबोधन में कहा कि इतिहास विभाग द्वारा आयोजित विविध शिल्प कलाओं में निर्मित कलाकृतियों के अवलोकन से सुखद अनुभूति हुई । महाविद्यालय नई शिक्षा नीति के अनुरूप नवाचार के माध्यम से विद्यार्थीयों में स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने हेतु निरन्तर प्रयास कर रहा है। कार्यशाला के माध्यम से हम अपनी कला संस्कृति को समझने एवं उनको संरक्षित करने में सफल होंगे। इसके लिये महाविद्यालय प्रशासन एवं इतिहास विभाग के प्रयास की उन्होंने प्रशंसा की स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पांडेय ने बताया कि नई शिक्षा नीति के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास एवं फैकल्टी डेवेलोपमेंट कार्यशाला का आयोजन किया गया। पुरातात्विक प्रतिकृति, बास शिल्प, मटपरई शिल्प एवं टेराकोटा शिल्प प्रशिक्षण से विद्यार्थियों को छग की स्थानीय कला से परिचित कराने उनको संरक्षित करने एवं विद्यार्थियों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने हेतु विभाग निरंतर कार्यशालाओं का आयोजन कर रहा हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं संरक्षक, डॉ. आर. एन. सिंह ने अपने उदबोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति एवं रोजगार मूलक कार्यक्रम महाविद्यालय में इतिहास विभाग के द्वारा सतत् किये जा रहे हैं और इससे विद्यार्थियों को स्वराजगार के लिय प्ररित किया जा रहा है। साथ ही उनको लोक संस्कृति से भी परिचित कराया जा रहा है और इसके लिये महाविद्यालय एक डिप्लोमा कोर्स शुरू करने जा रहा हैं ताकि विद्यार्थियों को इस तरह का प्रशिक्षण नियमित मिलता रहे महाविद्यालय में कला 1 एवं पुरातत्व पर आधारित एक संग्रहालय स्थापित करने की भी इच्छा उन्होंने व्यक्त की । कार्यक्रम में आई क्यू ए सी की कोडिनेटर प्रो. जगजीत कौर सलुजा, प्रो. अनुपमा अस्थाना, प्रो. पदमावती प्रो. अजय सिंह, प्रो. आर. एस. सिंह, प्रो. श्रीनिवास देशमुख प्रो. शकील हुसैन डा. विनाद अहिरवार डा. के. पदमावती तथा अन्य प्रध्यापक, कर्मचारी एवं प्रतिभागी विद्यार्थियों के साथ अन्य संकायों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन विभाग का प्रध्यापक डॉ ज्योति धारकर ने दिया।